यहोवा शालोम - हमारी शान्ति का परमेश्वर
रविवार, 09 अगस्त (हिंदी सभा)

परमेश्वर — हमारी शान्ति

न्यायियों **6:23–24**

23 तब यहोवा ने उससे कहा, "तुझे शान्ति मिले; मत डर, तू नहीं मरेगा।" **24** तब गिदोन ने वहाँ यहोवा के लिए एक वेदी बनाई और उसका नाम यहोवा शालोम रखा। वह आज तक अबीएजेरियों के ओप्रा में है।

जब गिदोन मिद्यानियों का सामना करने से डर रहा था और स्वयं को लेकर प्रश्न कर रहा था, तब परमेश्वर ने उसे आश्वासन दिया।

परमेश्वर ने अपने आपको शान्ति के परमेश्वर, यहोवा शालोम के रूप में प्रकट किया।

विशेष परिस्थितियों में परमेश्वर ने अपने विषय में किसी वर्णनात्मक नाम के द्वारा अपने चरित्र और सामर्थ्य को प्रकट किया। इस मामले में, वह अपने आपको शान्ति के परमेश्वर के रूप में प्रकट कर रहा है। शान्ति का अर्थ चुनौतियों, भय या प्रश्नों का न होना नहीं है। शान्ति उस परिस्थिति के बीच भी गहरी स्थिरता और शान्त मन की अवस्था है, जिससे आप और मैं होकर गुजर रहे हैं। जब बाहर शान्ति नहीं होती, तब भी परमेश्वर शान्ति का स्रोत है। वह हमारी शान्ति का आधार बना रहता है।

क्रूस के द्वारा उपलब्ध कराई गई

यशायाह **53:5**

परन्तु वह हमारे ही अपराधों के कारण घायल किया गया,
वह हमारे अधर्म के कामों के हेतु कुचला गया;
हमारी ही शान्ति के लिए उस पर ताड़ना पड़ी,
और उसके कोड़े खाने से हम चंगे हुए।

इफिसियों **2:14**

14 क्योंकि वही हमारी शान्ति है, जिसने दोनों को एक किया और बीच की विभाजन करने वाली दीवार को गिरा दिया।

यीशु परमेश्वर का पूर्ण स्वरूप हैं और हमारी शान्ति हैं, जिन्हें हम किसी भी परिस्थिति में थामे रह सकते हैं।

क्रूस का कार्य पूरा हो चुका है। क्रूस पर शान्ति के लिए पूरा मूल्य चुका दिया गया। हमारे शालोम के लिए जो दण्ड आवश्यक था, वह यीशु पर पड़ा, जिससे शान्ति ऐसी विरासत बन गई है जिसे हम केवल विश्वास के द्वारा प्राप्त करते हैं।

हम सिद्ध शान्ति में चल सकते हैं

यशायाह **26:3**

जिसका मन तुझ पर लगा रहता है,
उसकी तू पूर्ण शान्ति के साथ रक्षा करता है,
क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।

इब्रानी भाषा में शालोम, शालोम का अर्थ "पूर्ण" या "सम्पूर्ण" शान्ति है। बाइबल में शालोम केवल संघर्ष की अनुपस्थिति से कहीं अधिक है; यह हमारी आत्मा, मन, शरीर और सम्बन्धों में सम्पूर्ण कुशलता, पूर्णता और स्वस्थता है।

परमेश्वर की शान्ति में बने रहना सम्भव है, क्योंकि हमारी शान्ति का स्रोत संसार पर निर्भर नहीं है।

यशायाह **26:3** (यंग्स लिटरल ट्रांसलेशन)

"तू उस मन को शान्ति—शान्ति में दृढ़ करता है, जो तुझ पर स्थिर है; क्योंकि वह तुझ पर भरोसा रखता है।"

"स्थिर" मन रखने का अर्थ है ऐसा मन—हमारे विचारों और कल्पनाओं सहित—जो परमेश्वर पर "टिका हुआ", विश्राम करता हुआ और उस पर निर्भर हो।

इस विषय में हम आगे और देखेंगे।

और ऐसा मन शान्ति से “दृढ़” किया जाता है। इब्रानी भाषा में “शालोम” शब्द दो बार प्रयोग किया गया है—“शालोम, शालोम।” हम शान्ति, शान्ति अर्थात् पूर्ण शान्ति से दृढ़ किए जा सकते हैं।

शान्ति में चलना

हमारे सामने कई ऐसी चुनौतियाँ हो सकती हैं जो हमारी शान्ति को छीन सकती हैं, जैसे भय, चिन्ता, घबराहट, दुःख, निराशा, अत्यधिक सोचना, दबाव, कम आत्म-सम्मान और ऐसी ही कई अन्य बातें। आज हम इनमें से कुछ के विषय में बात करेंगे।

1. चिन्ता

फिलिप्पियों **4:6–8**

6 किसी भी बात की चिन्ता मत करो, बल्कि हर बात में प्रार्थना और विनती के द्वारा धन्यवाद के साथ अपनी विनतियाँ परमेश्वर के सामने प्रस्तुत करो।

7 और परमेश्वर की वह शान्ति, जो सारी समझ से परे है, मसीह यीशु में तुम्हारे हृदय और तुम्हारे विचारों की रक्षा करेगी।

8 अन्त में, हे भाइयों, जो-जो बातें सत्य हैं, जो-जो बातें आदरणीय हैं, जो-जो बातें उचित हैं, जो-जो बातें पवित्र हैं, जो-जो बातें मनभावनी हैं, जो-जो बातें अच्छी प्रतिष्ठा की हैं, अर्थात् जो कोई सद्गुण और प्रशंसा की बात हो, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।

चिन्ता किसी सम्भावित खतरे के प्रति हमारी स्वाभाविक प्रतिक्रिया है। लेकिन जब यह अनियंत्रित और अत्यधिक हो जाती है, तो यह हमारे मन और शरीर दोनों के लिए विनाशकारी बन जाती है।

प्रार्थना हमारे लिए अपनी चिन्ताओं को परमेश्वर के सामने रख देने का एक अद्भुत माध्यम है। प्रार्थना और परमेश्वर के वचन के द्वारा अपने मन को नया करना हमारे मन को परमेश्वर की शान्ति से दृढ़ और सुरक्षित रखेगा।

हम अपनी परिस्थितियों से इनकार नहीं कर रहे हैं, बल्कि यह स्वीकार कर रहे हैं कि परमेश्वर हमारी परिस्थितियों से बड़ा है।

प्रार्थना के द्वारा हम परमेश्वर को आमंत्रित करते हैं कि वह आए और वह कार्य करे जो केवल वही कर सकता है।

परमेश्वर अपनी महिमा प्रकट करता है और असम्भव कार्य करता है। (प्रेरितों के काम **16:25–26)**

चिन्ता को अपने जीवन में स्थान न दें।

2. चिन्ता और फिक्र

मत्ती **6:25–34**

25 "इसलिए मैं तुमसे कहता हूँ, अपने जीवन के लिए यह चिन्ता न करो कि हम क्या खाएँगे या क्या पीएँगे; और न अपने शरीर के लिए कि क्या पहनेंगे। क्या जीवन भोजन से और शरीर वस्त्र से बढ़कर नहीं?

26 आकाश के पक्षियों को देखो, वे न तो बोते हैं, न काटते हैं और न कोठारों में इकट्ठा करते हैं; फिर भी तुम्हारा स्वर्गीय पिता उन्हें खिलाता है। क्या तुम उनसे अधिक मूल्यवान नहीं हो?

27 तुम में कौन ऐसा है जो चिन्ता करके अपनी आयु में एक हाथ भी बढ़ा सकता है?

28 "और वस्त्र के लिए क्यों चिन्ता करते हो? मैदान के सोसन के फूलों पर ध्यान करो कि वे कैसे बढ़ते हैं; वे न तो परिश्रम करते हैं, न कातते हैं।

29 फिर भी मैं तुमसे कहता हूँ कि सुलैमान भी अपने सारे वैभव में इनमें से किसी के समान वस्त्र पहने हुए न था।

30 इसलिए जब परमेश्वर मैदान की घास को, जो आज है और कल भट्टी में झोंकी जाएगी, ऐसा वस्त्र पहनाता है, तो हे अल्पविश्वासियों, क्या वह तुम्हें इससे अधिक वस्त्र न पहनाएगा?

31 इसलिए यह कहकर चिन्ता मत करो**, '**हम क्या खाएँगे**?'** या 'क्या पीएँगे**?'** या 'क्या पहनेंगे**?'**

32 क्योंकि अन्यजाति इन सब वस्तुओं की खोज में रहते हैं। तुम्हारा स्वर्गीय पिता जानता है कि तुम्हें इन सब वस्तुओं की आवश्यकता है।

33 परन्तु पहले परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो**,** तो ये सब वस्तुएँ तुम्हें दे दी जाएँगी।

34 इसलिए कल के लिए चिन्ता मत करो**,** क्योंकि कल अपना चिन्ता स्वयं कर लेगा। आज के लिए आज ही का दुःख बहुत है।"

चिन्ता का अर्थ नकारात्मक बातों पर लगातार ध्यान लगाए रखना है**,** जहाँ हम समस्या को स्वीकार करने से आगे बढ़कर उसके विषय में अत्यधिक सोचते रहते हैं।

आइए इस अंश में प्रभु हमें जो सिखा रहे हैं**,** उसे सरल रूप में समझें**:**

परमेश्वर उन बातों की परवाह करता है जो हमारे लिए महत्वपूर्ण हैं। (मत्ती **6:32)**

परमेश्वर मेरी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। (मत्ती **6:33)**

मुझे परमेश्वर पर विश्वास रखना चाहिए। (मत्ती **6:30)**

मुझे परमेश्वर के राज्य पर ध्यान केन्द्रित करना चाहिए। (मत्ती **6:33)**

3. जय पाना

यूहन्ना **16:33**

33 ये बातें मैंने तुमसे इसलिए कही हैं कि तुम्हें मुझ में शान्ति मिले। संसार में तुम्हें क्लेश होगा**;** परन्तु ढाढ़स बाँधो**,** मैंने संसार को जीत लिया है।"

इस संसार में बाहरी परेशानियाँ निश्चित हैं, लेकिन यीशु हमें आश्वासन देते हैं कि उसमें हमें शान्ति मिलती है। अपने हृदय की रक्षा करके और मसीह के साथ अपने सम्बन्ध को सक्रिय बनाए रखकर, बाहरी तूफानों के बावजूद उसकी शान्ति हमारी भावनाओं की रक्षा करती है।

स्थायी शालोम का अनुभव करने के लिए आवश्यक है कि हम अपने दैनिक निर्णयों को परमेश्वर के वचन के अनुरूप करें। जब हम उसके वचन का पालन करके अपना जीवन बनाते हैं, तब हम ऐसी अटल नींव स्थापित करते हैं जो विपत्ति आने पर भी स्थिर रहती है।

यहोवा शालोम के कारण हम हर समय शान्ति में चल सकते हैं।